सुरजीत मान जलईया सिंह

जन्म स्थान- गाँव नगला नत्थू, सादाबाद, हाथरस (उ.प्र.)
शिक्षा- एम.ए (हिन्दी), (पत्रकारिता) एल. एल. बी., बी. एड.
प्रकाशन- माँ का आँचल, आदरांजलि (काव्य संग्रह)
सम्मान- अनेक सम्मान एवं पुरस्कार
संप्रति- साहित्य रत्न (संस्थापक, प्रधान संपादक), अध्यापन कार्य

अक्सर निपट निठ्ठला कहते

अक्सर निपट निठ्ठला कहते
उसको दाताराम।
किन्तु लगन से करता सुक्खू
सबके हँसकर काम।।

भौजी दिनभर ताने मारे
भौहें ऐंठें भईया।
वापस कब लौटाओगे तुम
हमको भला रुपईया।
टाल रहा है हर दिन कल पर
सुबह,दोपहर, शाम।
अक्सर निपट निठ्ठला कहते
उसको दाताराम।

माँ तो प्यार जता लेती है
बाप न करता बात।
बहनों ने भी किया किनारा
हँसती उस पर जात।
पीड़ाओं की उथल-पुथल में
भटके मन के धाम।
अक्सर निपट निठ्ठला कहते
उसको दाताराम।

मुँह पर तो सब ठीक बोलते
राजू, रप्पन, कजरी।
पीठ फिरे देते गाली सब
भर -भर दो-दो अँजुरी।
खुद ही से अनभिज्ञ बना वो
बना फिरे अभिराम।
अक्सर निपट निठ्ठला कहते
उसको दाताराम।

हम तुम्हारे शहर से बदनाम हो कर

हम तुम्हारे शहर से बदनाम हो कर।
किस शहर जाकर के अपना मुँह छुपाते।

मर गयी हैं मेरे अन्दर भावनाएँ।
प्रेम मुझसे हो गया है मरघटों को।
निज नयी सजती चिताएँ जिन्दगी की।
फूँकता हूँ रोज यादों के शवों को।
ये गली पीछा भी छोड़ेगी कहीं क्या ?
इस गली से किस तरह छुपते-छुपाते।
हम तुम्हारे शहर से बदनाम हो कर।
किस शहर जाकर के अपना मुँह छुपाते।

घात में बैठे हुए थे कुछ शिकारी।
हम हुए मदमस्त खाली हाथ निकले।
था भरोसा जिनपे अपनी जान जैसा।
वो ही मेरे आस्तीनी साँप निकले।
बेबसी का कर न सकते, कुछ निवारण।
एक शावक से पड़े बस छटपटाते।
हम तुम्हारे शहर से बदनाम हो कर।
किस शहर जाकर के अपना मुँह छुपाते।

उनके भोलेपन की उस जादूगरी में।
कोई भी आ सकता था बनके कबूतर।
पंख हम बस फड़फड़ाकर रह गए थे
और उड़ता भी कहाँ तक एक तीतर।
बन गये बच्चों की नज़रों में तमाशा।
किस तरह इस खेल से हम दूर जाते।
हम तुम्हारे शहर से बदनाम हो कर।
किस शहर जाकर के अपना मुँह छुपाते।

ISSN:2583-8849